

## INTERNATIONAL RELATIONS

### MoUs signed and dialogue for International relations initiated

- University of Buffalo, USA for research and education.
- University of Cambridge, UK for a collaborative project on cultural and geographical transformation of North West India.
- Trincomalee Campus of Eastern University, Sri Lanka for collaboration in teaching and research including exchange of faculty.
- Rosenberg Society for Holistic Health and Education, European Academy of Ayurveda, Burstein, Germany.
- Colorado State University, USA for collaboration in education and research.
- Delegation of University of Western Ontario; London, Canada met Vice Chancellor Prof. D.P. Singh to explore collaboration in education and research.
- Rectors of Universities from Finland had constructive dialogue with BHU Vice Chancellor for collaboration in connection with development of science in their Universities.
- Director, Institute of Technology, Fiji called on Vice Chancellor and Rector of Banaras Hindu University to explore exchange programme in the field of engineering and technology.
- First Secretary of Embassy of Islamic Republic of Afghanistan Mr. Abbas Basir called on the Vice Chancellor to explore possible collaboration in Higher Education.
- MoU with UNICEF for the establishment of State Child Survival Resources Centre at IMS for training of medical officers of UP Government.
- MoU with ICRISAT for the production of a virus for the control of insect pest of crops.
- MoU with Alkem Pharmaceuticals Ltd. Mumbai for new drugs development and Transfer of Technology for low molecular weight Heparin.
- Moser Baer India Limited (MBIL) for joint R&D work in the field of optical media industry.

### Hundreds of Foreign Nationals Seek Admission in BHU

About 450 foreign nationals have submitted their application forms for admission in Banaras Hindu University. The BHU International Centre received 400 application forms for Regular Undergraduate, Postgraduate, Part time Diploma / Certificate Courses and 39 applications for PhD. The students belonged to Afghanistan, Bangladesh, Bhutan, Britain, Bulgaria, Cambodia, China, Ecuador, Fiji, France, Germany, Hungary, Indonesia, Iran, Iraq, Irish, Israel, Italy, Japan, Kazakh, Kenya, Korea, Laos, Libyan, Maldivia, Mauritius, Mexico, Mongolia, Myanmar, Namibia, Nepal, New Zealand, Poland, Russia, Spain, Srilanka, Taiwan, Tajikistan, Thailand, Tibet, Turkey, Trinidad, Ukrain, USA, Vietnam and Zimbabwe.



MoU with University of Buffalo, USA



Dialogue with delegation of University of Western Ontario, Canada



Dialogue with Director, Institute of Technology, Fiji



First Secretary of Embassy of Islamic Republic of Afghanistan Mr. Abbas Basir called on the Vice Chancellor

## छात्रावासों में जीवन को दिशा मिलती है

-प्रोफेसर धीरेन्द्र पाल सिंह



छात्रावास में अलग-अलग प्रदेशों से आये छात्र रहते हैं, इन्हीं छात्रावासों में विद्यार्थियों के अन्दर आपसी प्रेम सौहार्द्र की भावना पनपती है। जो एक लघु भारत को प्रदर्शित करता है। यहाँ संस्कारों तथा सभ्यता का भी आदान-प्रदान होता है। साथ ही उनके आगे बढ़ने के लिए उनके आत्मबल में भी वृद्धि होती है। ऐसे परिवेश को बनाने में छात्रावास के वार्डन महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। स्वतंत्रता भवन में आयोजित इण्टर हास्टल मेन्टेन्स प्रतियोगिता पुरस्कार वितरण समारोह में बतौर मुख्य अतिथि कुलपति प्रोफेसर डी.पी. सिंह ने उक्त विचार व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि छात्रावास हमें जीना सिखाते हैं। छात्रावास में सुख सुविधाएं और अनुशासन तथा प्राकृतिक परिवेश को कायम रखना वार्डन की मुख्य जिम्मेदारी होती है। उन्होंने रैगिंग पर चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि रैगिंग एक बुराई है इससे निजात पाना बहुत जरूरी है। यह छात्रों को हीन भावना से ग्रस्त करती है। इस बुराई को खत्म करने के लिए विश्वविद्यालय प्रशासन कटिबद्ध है। इस अवसर पर इण्टर हास्टल मेंटेंस प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ छात्रावास का पुरस्कार लिम्बडी छात्रावास को मिला। द्वितीय पुरस्कार राजपूताना छात्रावास को दिया गया। इसके अलावा तीन श्रेणियों में लिम्बडी छात्रावास (आईटी) प्रथम, राजपूताना छात्रावास को द्वितीय, भाभा छात्रावास को तृतीय स्थान एवं प्रोत्साहन पुरस्कार विश्वकर्मा छात्रावास, मोर्वी छात्रावास, डालमिया छात्रावास एवं बल्लभभाई पटेल छात्रावास को मिला। गर्ल्स छात्रावास में ज्योतिकुंज को प्रथम, गांधी स्मृति छात्रावास को तृतीय एवं प्रोत्साहन पुरस्कार यमुना गर्ल्स छात्रावास, स्वाती कुंज गर्ल्स छात्रावास एवं सरस्वती गर्ल्स छात्रावास को मिला। राजीव गांधी साउथ कैम्पस स्थित छात्रावास में छात्रावास नम्बर एक को प्रथम स्थान, छात्रावास नम्बर तीन को द्वितीय स्थान, छात्रावास नम्बर दो को तृतीय स्थान मिला। प्रतियोगिता के निर्णायक मण्डल में डॉ. प्रमोद कुमार तिवारी, डॉक्टर मंजू बानिक, डॉक्टर कल्पना अग्रवाल, डॉक्टर राघवेन्द्र अग्रवाल, डॉक्टर श्री नारायण सिंह एवं प्रमुख रूप से छात्र अधिष्ठाता प्रोफेसर वी.के. कुमरा, आई.टी. के निदेशक प्रोफेसर एस.एन. उपाध्याय सहित अन्य अध्यापक उपस्थित थे। कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन प्रोफेसर श्री सिंह ने किया।

## दो दर्जन से अधिक फसल प्रजातियों का उत्पादन



काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिक खाद्यान्नों की पर्याप्त उपलब्धता के लिए बीजों की उन्नत किस्में विकसित करने में जुटे हुए हैं। अब तक यहाँ के वैज्ञानिकों ने धान, गेहूँ, अरहर, मूँग, मटर, राजमा, मसूर, सूरजमुखी आदि अनाजों की 29 से अधिक प्रजातियाँ विकसित की हैं। इन प्रजातियों के प्रति किसानों की ललक भी बढ़ी है। कारण है कि ये किस्में कम समय व कम लागत में अधिक उत्पादन देने में समर्थ हैं। कृषि विज्ञान संस्थान के निदेशक प्रो. शिवराज सिंह का कहना है कि तेजी से बढ़ती जनसंख्या को पर्याप्त खाद्यान्न की उपलब्धता सुनिश्चित करना वैज्ञानिकों का दायित्व है और इसे पूरा करने में हम लोग जुटे हैं। उन्होंने बताया कि हाल में ही विकसित धान की दो किस्मों को राज्य सरकार से अनुमोदन मिल गया है और केन्द्र से अनुमोदन का इंतजार किया जा रहा है। संस्थान में विकसित उन्नत प्रजातियाँ निम्नवार हैं।

**गेहूँ-** मालवीय गेहूँ 12, 37, 55, 206, 213, 234, 251, 318, 488, 510, 533 नामक प्रजातियाँ विकसित की हैं।

**चावल-** मालवीय धान-36 (एचयूआर-36), मालवीय बासमती-1 (एचयूबीआर 2-1), मालवीय धान 3022 (एचयूआर 3022) आदि विकसित की हैं। प्रो. सिंह ने बताया कि एचयूआर-105 तथा 4-3 की किस्म को प्रदेश सरकार ने अनुमोदन कर दिया है एवं केन्द्र सरकार की स्वीकृति का इंतजार है। **अरहर-** मालवीय विकल्प (एमए-3), मालवीय विकास (एमए-6) व मालवीय चमत्कार (एमएल-13) आदि किस्में विकसित की गई हैं।

**मूँग-** मालवीय ज्योति (एचयूएम-1), मालवीय जागृति (एचयूएम-2), मालवीय जनप्रिय (एचयूएम-6), मालवीय जनचेतना (एचयूएम-12) व मालवीय जनकल्याणी (एचयूएम-16) आदि किस्में विकसित की गई हैं।

**राजमा-** एचयूआर-15, एचयूआर-137, एचयूआर-203

**मटर-** मालवीय मटर-2 (एचयूपी-2), मालवीय मटर-15 (एचयूडीपी-15)

**मसूर-** मालवीय विश्वनाथ (एचयूएल-57)

**सूरजमुखी-** एचयूएस-305 नामक किस्में विकसित की गई हैं। उन्होंने बताया कि बीजों के स्टोरेज, प्रोसेसिंग व बिक्री की प्रक्रिया को केन्द्रीकृत किया जा रहा है। इससे किसानों को एक ही स्थान पर सब कुछ उपलब्ध हो सकेगा। बताया कि संस्थान को 280 करोड़ रुपये मिले हैं जिसके उपयोग से कृषि प्रक्षेत्र पर सुविधाएं विकसित की जा रही हैं।

## उन्नत मत्स्य बीज तैयार करने की अभिनव पहल

अनाज के बीजों के साथ ही काशी हिन्दू विश्वविद्यालय स्थित कृषि विज्ञान संस्थान मछली के बीजों (छोटी-छोटी मछलियाँ) का उत्पादन करने की दिशा में सक्रिय हो गया है। इसके लिए विश्वविद्यालय परिसर स्थित कृषि प्रक्षेत्र पर छोटे-बड़े कुल 36 तालाब बनाये गये हैं। यहाँ विभिन्न प्रजातियों की मछली के बीजों के प्रजनन का काम चल रहा है। संस्थान के निदेशक प्रो. शिवराज सिंह का कहना है कि मछली पालकों को गुणवत्तायुक्त मछली के बीजों की उपलब्धता सुनिश्चित कराने के उद्देश्य से यह कदम उठाया गया है। बताया कि अब तक विभिन्न प्रजातियों के लगभग 25 लाख मछली के बीजों का उत्पादन किया गया।

अगस्त सितम्बर माह से इनकी बिक्री हो रही है। उन्होंने बताया कि रोहू-10 लाख, कतला 4.50 लाख, मशगल



5.50 लाख, ग्रास कार्प 4 लाख व कॉमन कार्प 1 लाख बीज उत्पादन किये गये। उन्होंने बताया कि अब दो करोड़ मछली के बीज उत्पादन का लक्ष्य तय किया गया है। मछली के बीज उत्पादन के बावत भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

(आईसीएआर) को 1.25 करोड़ रुपये का प्रोजेक्ट सौंपा गया जिसमें 75 लाख रुपये स्वीकृत हो गये हैं। बरकछा स्थित राजीव गांधी दक्षिणी परिसर-में भी मछली के बीज उत्पादन की संभावनाएं तलाशी जा रही हैं। मछली के इन बीजों का लाभ पूर्वांचल, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, बिहार आदि के मछली पालक उठा सकते हैं।

इसी क्रम में फिश सीड प्रोजेक्ट के नोडल आफिसर प्रो. पारसनाथ सिंह ने बताया कि काशी प्रक्षेत्र पर मछलियों के पालने के साथ ही उनके अंडे व बच्चे की बेहतरीन तरीके से देखभाल की जाती है ताकि नस्ल बेहतर हो। अंडे के लिए अलग, जब अंडे फूटते हैं तो बच्चों के लिए अलग, कुछ बड़े होते हैं तो अलग-अलग तालाबों में उन्हें और विकसित किया जाता है। फिर मछली पालकों को दिया जाता है। साथ ही उन्हें पालने के तरीके भी बताये जाते हैं। बताया कि बत्ख पालन की ओर ध्यान केन्द्रित है और इस दिशा में कुछ प्रयास भी शुरू कर दिया गया है।

## बढ़ती आबादी व तीव्र औद्योगिक विकास से पर्यावरण में परिवर्तन हुआ

-प्रोफेसर धीरेन्द्र पाल सिंह

विश्व पर्यावरण दिवस समारोह की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. धीरेन्द्र पाल सिंह ने कहा है कि बढ़ती हुई आबादी एवं तीव्र औद्योगिक विकास ने पिछले कुछ दशकों से पर्यावरण घटकों में अवांछनीय परिवर्तन किये हैं। फलस्वरूप धरती पर हमारा जीवन खतरे में पड़ गया है। यदि हमने विकास की प्रक्रिया को "सतत विकास" के सिद्धान्तों के अनुरूप नहीं अपनाया तो आगे आने वाली पीढ़ी को प्राकृतिक संसाधन विहीन एवं प्रदूषित धरती छोड़कर जायेंगे और भावी पीढ़ी हमें कभी माफ नहीं करेगी। उन्होंने कहा कि सबसे पहले हमें अपने घर से ही पर्यावरण संरक्षण के कार्यक्रमों को प्रारम्भ करना पड़ेगा। इसके लिए उन्होंने विश्वविद्यालय में "पर्यावरण एवं सतत विकास संस्थान" तथा 'मालवीय स्मृति उद्यान' के स्थापना की घोषणा की।

प्रोफेसर सिंह ने विश्वविद्यालय परिसर को साफ सुथरा, हरा-भरा एवं सुन्दर बनाये रखने हेतु स्वयं संकल्प लिया और विश्वविद्यालय के अध्यापकों, अधिकारियों, कर्मचारियों तथा छात्रों को छः सूत्रीय संकल्प कराया कि जल संरक्षण हेतु पानी का सदुपयोग करेंगे तथा नलों की टोट्टी को व्यर्थ खुला नहीं छोड़ेंगे, पालिथिन बैग में कूड़े अथवा खाद्य सामग्री को रखकर सड़क या नाली में नहीं फेंकेंगे, अपशिष्ट पदार्थों को खुले वातावरण में नहीं जलायेंगे। कार्यस्थल एवं घर पर कमरे से बाहर निकलते समय बिजली का स्विच ऑफ करेंगे। कागज के सदुपयोग हेतु उसके दोनों पृष्ठों का प्रयोग करेंगे तथा हरे वृक्षों को कटने से बचायेंगे तथा उनकी सुरक्षा करेंगे। इस अवसर पर पर्यावरण विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र के समन्वयक प्रो. बी.डी. त्रिपाठी ने कहा कि औद्योगिक क्रान्ति के पहले हमारे वातावरण में कार्बनडाई आक्साइड गैस की मात्रा केवल 280 पीपीएम थी तो वर्तमान 380 पीपीएम हो गई है तथा यदि इसे रोका नहीं गया तो 21वीं शताब्दी के अन्त तक इसकी मात्रा 1260 पीपीएम हो जायेगी जिससे

वातावरण इतना गरम हो जायेगा कि हमारा जीना दूभर हो जायेगा। डा. त्रिपाठी ने बताया कि विश्वविद्यालय परिसर में उन्नीस ट्यूबवेलों के माध्यम से करीब 115 मिलियन क्यूबिक मीटर भूजल प्रति वर्ष दोहन किया जाता है जबकि मात्र 55 मिलियन क्यूबिक मीटर प्रतिवर्ष वर्षा जल प्राप्त होता है। परिसर में भूजल पुनर्भरण हेतु 75 हजार क्यूबिक मीटर सतही वर्षा जल तथा 2 हजार क्यूबिक मीटर छत्तों का जल कृत्रिम रिचार्ज ट्यूबवेल द्वारा प्रयोग में लाया जाता है। हाल ही में किये गये सर्वेक्षण का हवाला देते हुए उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय परिसर में 22 प्रतिशत हरियाली है जबकि डीरेका 34 प्रतिशत तथा कैंटोमेंट क्षेत्र में 45 प्रतिशत है। मुख्य वक्ता प्रो. राधेश्याम अम्बष्ट के अनुसार संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम द्वारा सुझाये गये सतत विकास सिद्धान्तों के अनुरूप ही कार्य करने पर पर्यावरण का संरक्षण किया जा सकता है। प्रो. अम्बष्ट ने चेतावनी देते हुए कहा कि हमारा प्राकृतिक संसाधनों का अनियंत्रित दोहन हमें विनाश की ओर ले जायेगा। इस अवसर पर प्रोफेसर उदयकान्त चौधरी ने गंगा प्रदूषण नियंत्रण हेतु कई सुझाव दिए। कार्यक्रम के प्रारम्भ में विश्वविद्यालय के कुलसचिव एन सुन्दरम् ने अतिथियों का स्वागत किया तथा समारोह का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन दिया।

## सीएचएस के वैभव को नेशनल फेलोशिप

सेण्ट्रल हिन्दू ब्यायज स्कूल कमच्छा में बारहवीं कक्षा के छात्र वैभव श्रीवास्तव ने स्कूल सहित समूचे जनपद का नाम रोशन किया है। वैभव को भारतीय विज्ञान संस्थान बंगलूरु द्वारा किशोर वैज्ञानिक प्रोत्साहन योजना के तहत नेशनल फेलोशिप के लिए चुना गया है। इसके क्रम में उसे उच्च अध्ययन के लिए चार हजार रुपये प्रतिमाह की फेलोशिप सहित 16 हजार रुपये की आकस्मिक व्यय राशि प्रदान की गई जो अप्रैल 2008 से लागू होगी।

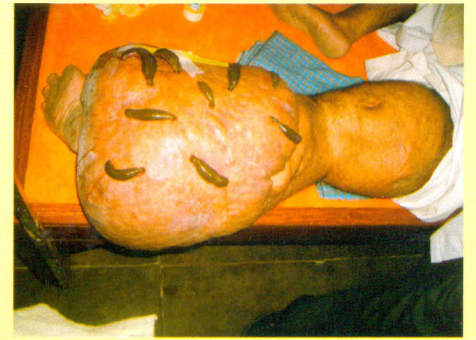
उक्त फेलोशिप देश के चुनिन्दा प्रतिभावान ऐसे छात्रों को दी जाती है जिनकी विशेष रुचि विज्ञान में होती है। इसमें चयन के लिए छात्रों को राष्ट्रीय स्तर की लिखित परीक्षा के साथ ही साक्षात्कार में पास होना पड़ता है। वैभव को यह फेलोशिप पीएचडी उपाधि के समकक्ष अध्ययन तक निरन्तर प्राप्त होती रहेगी। स्कूल में एक समारोह आयोजित कर प्रधानाचार्य एन के शाही ने वैभव को सम्मानित किया। उन्होंने बताया कि वैभव ने वर्ष 2006-07 में सीबीएसई की हाईस्कूल परीक्षा में जनपद में दूसरा स्थान प्राप्त किया था।

## बीएचयू का पंचकर्म विभाग जुटा है अभियान में : लीच थैरेपी से आस्टियोपोरोसिस को मात

गाय-भैंसों के शरीर से चिपकी जोंक (लीच) भले ही खून चूसकर उनके स्वास्थ्य पर बुरा असर डालती हो, मानव के लिए ये जोंक वरदान साबित हो रही हैं। काली जोंकों की मदद से चिकित्सा विज्ञान संस्थान का आयुर्वेद संकाय आस्टियोपोरोसिस के मरीजों को रोगमुक्त करने के अभियान में लगा है।

कैल्शियम की कमी का सीधा सम्बन्ध आस्टियोपोरोसिस से है। इस रोग से प्रभावित मरीजों की हड्डियाँ कमजोर हो जाती हैं। आयुर्वेद संकाय का पंचकर्म विभाग जोंकों के सहयोग से आस्टियोपोरोसिस के मरीजों का कष्ट दूर कर रहा है।

इस विधि में रोग से प्रभावित जोड़ों के आस-पास जोंकों को चिपका दिया जाता है। ये जोंक प्रभावित क्षेत्र की रक्तवाहिनियों से अशुद्ध रक्त चूस लेती हैं। इसके फलस्वरूप आसपास की पतली रक्तवाहिनियों से रक्त का प्रवाह प्रभावित क्षेत्र की ओर जाता है। करीब एक घण्टे तक चलने वाली यह प्रक्रिया महीने में एक बार की जाती है। सिर्फ जोंक के चिपके रहने तक हल्की सी खुजली महसूस होती है। आस्टियोपोरोसिस के अलावा रक्त अशुद्धि स्किन डिसऑर्डर, फंगल इन्फेक्शन के इलाज में भी इनकी मदद ली जा रही है। उन रोगियों के लिए भी यह थैरेपी कारगर सिद्ध हो रही है जिनके सिर के बाल जगह-जगह से उड़ गये हैं। काय चिकित्सा विभाग के अध्यक्ष डॉ. एन पी राय के अनुसार इन दिनों आस्टियोपोरोसिस से पीड़ित महिलाएं खासतौर पर इस थैरेपी की मदद ले रही हैं। उन्होंने यह भी बताया कि एक बार प्रयुक्त जोंक को दुबारा छः महीने तक प्रयोग में नहीं लाया जाता है। साथ ही एक रोगी पर प्रयुक्त जोंक को दुबारा उसी पर इस्तेमाल किया जाता है। इसकी पहचान के लिए जोंक रखी बोटल या जार पर रोगी की पहचान अंकित कर दी जाती है। इस थैरेपी का समन्वय काय चिकित्सा विभाग के डा. ओ पी सिंह विशेष रूप से कर रहे हैं।



## कुलपति की वरिष्ठ नागरिकों से भेंट

नगर के प्रतिष्ठित लोगों की उपस्थिति से बीएचयू का एलडी गेस्ट हाउस बुधवार की शाम गुलजार रहा है। विश्वविद्यालय की ओर से आयोजित मिलन समारोह में कुलपति प्रो. धीरेन्द्रपाल सिंह ने पत्नी कमला सिंह के साथ लोगों का स्वागत किया। कुलपति ने विश्वविद्यालय के विकास के लिए लोगों से मदद की अपील की। सीएचएस गर्ल्स की पूर्व प्रधानाचार्या वयोवृद्ध बीबी करतार कौर पेण्टल की उपस्थिति ने पूरे माहौल को आत्मीयता से भर दिया।

कुलपति ने महामना के सपनों को साकार करने के लिए सबसे आशीर्वाद लिया। आयोजन में कुँवर अनन्त नारायण सिंह, अजय राय, गोरखपुर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. बीएम शुक्ल, महिला महाविद्यालय की पूर्व प्राचार्या प्रो.अन्नपूर्णा शुक्ल, ज्ञानप्रवाह की प्रबन्ध न्यासी विमला पोद्दार, उद्योगपति अशोक कपूर, प्रो. एसएस कुशावाहा विश्वविद्यालय कार्यकारिणी के सदस्यगण मीडिया व अन्य क्षेत्रों के प्रतिष्ठित लोगों के साथ ही विश्वविद्यालय परिवार के वरिष्ठ सदस्य मौजूद थे।



## मूल्यपरक शिक्षा दी जानी चाहिए

-प्रोफेसर धीरेन्द्र पाल सिंह

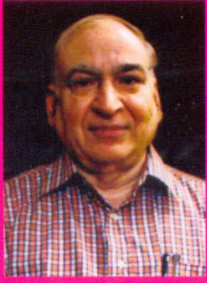
49वें दिशा निर्देशन पाठ्यक्रम का उद्घाटन समारोह करते हुए कुलपति प्रोफेसर धीरेन्द्र पाल सिंह ने प्रतिभागियों को नवीनतम शिक्षण प्रदान किये जाने पर जोर दिया जिससे कि इस पाठ्यक्रम की समाप्ति पर वह यह अनुभव करें कि उनकी शिक्षण योग्यता बढ़ गयी है। उन्होंने यह भी कहा कि यह समय भूमण्डलीकरण, निजीकरण, संसूचना अभियांत्रिकी उदारीकरण तथा पर्यावरण समस्याओं से सम्बन्धित है, इसलिए प्रतिभागियों को इसकी जानकारी देने की आवश्यकता है। उन्होंने मूल्यपरक शिक्षा प्रदान किये जाने की वकालत भी की। उन्होंने कहा कि शिक्षकों को अपनी कक्षाओं तथा समय सीमा तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए वरन विद्यार्थियों के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध को विकसित करके उनके व्यक्तित्व का पूर्ण विकास करना चाहिए। उन्होंने तीन शब्दों- संसूचना, ज्ञान तथा शिक्षा की व्याख्या करते हुए कहा कि शिक्षण संस्थाओं को केवल संसूचना तक सीमित नहीं रहना चाहिए वरन आध्यात्मिक ज्ञान विद्यार्थियों को प्रदान किया जाना चाहिए। शिक्षक को विद्यार्थियों के समक्ष उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए। स्वागत भाषण प्रो. कुमार पंकज ने दिया। दिशानिर्देशन पाठ्यक्रम की विस्तृत जानकारी समन्वयक प्रो. डी. के. सुजान ने दी। धन्यवाद ज्ञापन पाठ्यक्रम समन्वयक डा. अजय कुमार ने किया।

## ऑन लाइन होंगी दुर्लभ पाण्डुलिपियाँ

विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों की लाइब्रेरीज में करीब 12 हजार प्राचीन पाण्डुलिपियाँ हैं। इन दिनों इन्हें संरक्षित करने की कवायद चल रही है। आँकड़े बताते हैं कि सेण्ट्रल लाइब्रेरी में 7227 भारत कला भवन में 5020 संस्कृत विद्यालय में 75 तथा आयुर्वेद संकाय में 16 पाण्डुलिपियाँ हैं। इन दुर्लभ पाण्डुलिपियों को ऑन लाइन किया जा रहा है। लाइब्रेरी के इंचार्ज प्रो. आर एस दुबे का कहना है कि योजना पर काम शुरू हो चुका है और तेजी से चल रहा है। लाइब्रेरी की इस योजना का सीधा लाभ छात्रों को मिलेगा। इन प्राचीन पाण्डुलिपियों का लाभ आयुर्वेद साहित्य और दर्शन पढ़ने वालों के लिए विशेष महत्व है। छात्र इन दुर्लभ मैनुस्क्रिप्ट का अध्ययन इण्टरनेट के माध्यम से परिसर के अन्दर ही कर सकेंगे। उन्होंने बताया कि इस प्रक्रिया के तहत करीब 7550 पाण्डुलिपियों की सीढ़ी बनायी जा चुकी है और उन्हें इण्टरनेट पर डालने की तैयारी चल रही है। उन्होंने बताया कि इस पूरी प्रक्रिया में तीन से चार महीने का समय लग सकता है। यहाँ राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन (एनएमएम) के तहत दो साल पहले पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र बनाया गया। पाण्डुलिपियों को संरक्षित किए जाने के क्रम में (एनएमएम) ने बीएचयू को फण्ड और विशेषज्ञ उपलब्ध कराये।

## गीता देती है सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा

गीता सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है। कर्म ही व्यक्ति के हाथ में है। अपने कर्तव्य का निर्वहन ईमानदारी से करना चाहिए। यह बात कुलपति प्रो. धीरेन्द्र पाल सिंह ने कही। वह मालवीय भवन में गीता प्रवचन शृंखला के आरम्भ के अवसर पर बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि हमारा शरीर नश्वर है। जीवन और मृत्यु दोनों सत्य हैं। मृत्यु के बाद भय कैसा? इसलिए हमें निर्भीक रहना चाहिए। जीवन में रोजाना युद्ध करना पड़ता है। सबसे पहले विचारों से लड़ना पड़ता है। अपने मनोविकारों पर विजय पा लेने के बाद आदमी हमेशा प्रगति के पथ पर अग्रसर रहेगा। उन्होंने मुख्य वक्ता महामहोपाध्याय प्रो. सीताराम शास्त्री का सम्मान किया। प्रो. शास्त्री ने कहा कि धर्म, अर्थ, कर्म, मोक्ष गीता का सार है। गीता के हर अध्याय में कर्म, भक्ति तथा ज्ञान योग का समावेश है। उसका परम तत्व मोक्ष है। संचालन प्रो. उपेन्द्र पाण्डेय और धन्यवाद ज्ञापन संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय के प्रमुख प्रो. कृष्णाकान्त शर्मा ने किया।



## अनुशासन को देंगे पहली प्राथमिकता : अवधराम

काशी विद्यापीठ के नवनिर्वाहक कुलपति प्रो. अवधराम ने कहा कि अनुशासन की स्थापना उनकी पहली प्राथमिकता होगी। छात्र, शिक्षक और कर्मचारियों से यह अपेक्षा होगी कि वे अनुशासन का पूरा परिचय दें। उन्होंने कहा कि अनुशासन स्थापित होने के बाद एकेडमिक एक्सलेंस के लिए वातावरण अपने आप बन जाता है। उन्होंने कहा कि अगर उन्हें तीन साल काम करने का पूरा मौका मिला तो वे काशी विद्यापीठ को बीएचयू के बराबर ले आने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। उन्होंने कहा कि वे जो भी फैसला करेंगे विधि और शासनादेश के परिप्रेक्ष्य में करेंगे। शासन के निर्देश की अवहेलना नहीं की जायेगी। कहा कि विद्यापीठ का कुलपति बनना उनके लिए काफी गौरव की बात है। यह उनका लाइफटाइम एचीवमेंट है।

प्रोफेसर राम बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में 35 वर्ष तक शिक्षण कार्य से जुड़े रहे। पहली अगस्त 1943 को उन्नाव जिले में जन्मे प्रो. राम ने 1964 में लखनऊ विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी में बी.एस-सी. व बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से जियोफिजिक्स में एम.एस-सी. पास की। उन्होंने कनाडा से जियोफिजिक्स में पी.एच.डी. की। इसके बाद 1967 में वे बी.एच.यू. में ही लेक्चरर नियुक्त हो गये। बी.एच.यू. में जियोफिजिक्स डिपार्टमेंट के अध्यक्ष, अधिष्ठाता छात्र कल्याण सहित विभिन्न प्रशासनिक पदों पर रहे। इस समय वे बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय की कार्य परिषद के सदस्य हैं। प्रो. राम ने सेवानिवृत्त होने के बाद दो वर्ष तक लखनऊ विश्वविद्यालय में अतिथि शिक्षक के रूप में अध्यापन कार्य किया।

## जैव उर्वरक बनाने की पहल

कुलपति के निर्देशानुसार कूड़े के निस्तारण व इससे जैव उर्वरक बनाने की दिशा में पहल शुरु कर दी गई है। इस सम्बन्ध में पहली बैठक गत दिवस सेनेटरी एण्ड सर्विसेज विभाग में हुई जिसमें तय किया गया कि एक सप्ताह में परिसर की सड़कों पर गिरी प्रतियों को पहले से बने गड्ढे में डाल दिया जाये। जिससे परिसर की सड़कें साफ सुथरा दिखें और उसका उपयोग भी हो सके। गौरतलब है कि हॉस्टलों के निरीक्षण के दौरान कुलपति प्रो. डी पी सिंह ने पत्तियों व कूड़े आदि से जैव उर्वरक बनाने के लिए पहल करने का निर्देश दिया था।

## बीएचयू के दक्षिणी परिसर में ऊर्जा पार्क बनेगा

-कुलपति प्रो. डी.पी. सिंह

मिर्जापुर स्थित राजीव गांधी दक्षिणी परिसर में निर्मित प्रवक्ता आवास का विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. डी. पी. सिंह ने 18 जुलाई को उद्घाटन किया। इसके उपरान्त कुलपति ने लेक्चर थिएटर काम्पलेक्स, केन्द्रीय पुस्तकालय, कृषि विज्ञान केन्द्र सहित अन्य नवनिर्मित भवनों का निरीक्षण किया तथा 31 जुलाई तक इसे पूर्ण करने के निर्देश दिये। कुलपति महोदय ने एन.एस.एस. इन्वॉयरमेंट साइंस एण्ड टेक्नालॉजी की कक्षा में गये तथा छात्र, छात्राओं से वहाँ की समस्याओं के बारे में जानकारी ली। विद्यार्थियों ने दक्षिणी परिसर में उपलब्ध करायी जा रही सुविधाओं पर संतोष व्यक्त किया। इस अवसर पर दक्षिणी परिसर में कोर ग्रुप की बैठक हुई जिसमें कुलपति ने वहाँ चल रहे विकास कार्यों की जानकारी ली। पाठ्यक्रम समन्वयकों की बैठक में कुलपति ने कहा कि कुछ ऐसे प्रोजेक्ट चलाए जाने चाहिए जो यहाँ के स्थानीय विकास कार्यों से सम्बन्धित हो। इसके अलावा वृक्षारोपण आदि के लिए केन्द्र और राज्य सरकार की संस्थाओं से समन्वय स्थापित करने का प्रयास करना चाहिए। कुलपति ने नो रैगिंग जोन बनाने के प्रति सतर्कता बरतने पर भी बल दिया। दक्षिणी परिसर पर पढ़ने और पढ़ाने की संस्कृति विकसित करने के उद्देश्य से उन्होंने कहा कि यहाँ पर कम्प्यूटर आदि का प्रशिक्षण देना चाहिए तथा सेमिनार, कार्यशाला आदि आयोजित होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि हम चाहते हैं कि देश के ख्यातिप्राप्त विद्वान यहाँ आकर अपना व्याख्यान दें जिससे यहाँ के विद्यार्थी लाभान्वित हों। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव नटराजन सुन्दरम् दक्षिणी परिसर कोर ग्रुप के समन्वयक प्रो. शिवराज सिंह सहित अनेक अध्यापक एवं अधिकारी उपस्थित थे। कुलपति ने कहा कि विश्वविद्यालय में पर्यावरण एक सतत विकास संस्थान की स्थापना की पहल शुरू हो गयी है। उन्होंने कहा कि हमारा मानना है कि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय केवल शिक्षण प्रशिक्षण एवं अनुसंधान का केन्द्र बनने के साथ-साथ समूचे देश के पर्यावरण के क्षेत्र में प्रतिनिधित्व करें। उन्होंने कहा कि दक्षिणी परिसर को पर्यावरण मैत्री परिसर बनाना मेरा लक्ष्य है। नवनिर्मित भवनों में वाटर हार्वेस्टिंग के माध्यम से जल संरक्षण करने की पहल शुरू हो गई है। उन्होंने कहा कि दक्षिणी परिसर में गैर पारम्परिक ऊर्जा विभाग भारत सरकार के सहयोग से ऊर्जा पार्क की स्थापना होगी। पर्यावरण गतिविधियों पर वार्षिक कैलेंडर बनाने पर भी जोर दिया। उन्होंने कहा कि बीएचयू में यूनेस्को चेंबर ऑफ पीस एजुकेशन की स्थापना की पहल की जा रही है। कुलपति ने कहा कि दक्षिणी परिसर में जो भी पाठ्यक्रम चलाये जाए वह स्थानीय लोगों की जरूरत के अनुरूप हों।



## पर्वतारोहियों ने 16 हजार फीट पर गाड़े झण्डे

बीएचयू के पर्वतारोहियों का एक दल करीब 16000 फीट की ऊँचाई पर स्थित स्वर्गरोहिणी पर विजय पताका फहराने के पश्चात् मंगलवार को वापस वाराणसी पहुँचा। बीएचयू पहुँचने पर दल का भव्य स्वागत किया गया। पर्वतारोहियों के दल ने अपने एक महीने के अभियान के तहत दो स्थानों पर कैम्प किया। दल ने 36 किमी. पैदल चलकर एक रिकार्ड बनाया। दल ने सातोपंत स्वर्गरोहिणी, गौरीकुण्ड, केदारनाथ महालया पर्वत आदि जगहों से होते हुए पर्वतारोहण के अनुभव प्राप्त किये। जगह जगह पर भारी दिक्कतों का सामना करते हुए दल के सदस्य पूरी तरह खरे उतरे। दल में बलराम यादव, लीडर निशान्त कुमार, दर्शन कुमार झा, पूनम कुमारी, पल्लवी, ज्ञान, मनोरंजन अधिकारी, प्रणतरती भंजन, संतोष कुमार, अरूण अग्रवाल, सुमित, अदिति, सुजीत, सुधांशु शामिल थे। दल के प्रशिक्षक की भूमिका अरूण कुमार सिंह, जयप्रकाश, हृदय नारायण सिंह ने निभायी।

## मिसरौलिया गाँव की बायोगैस परियोजना देखने पहुँची टीम

यूनीसेफ के बायोगैस मिशन के तहत बलिया के बाँसडीह में मिसरौलिया गाँव के 30 घरों में चूल्हा जल रहा है। सस्ते ईंधन के साथ ही जैविक खाद की ऊपज भी हो रही है। इस उपलब्धि आकलन करने के लिए बीएचयू का तीन सदस्यीय दल सोमवार को दौरे पर रहा।

कुलपति प्रो. धीरेन्द्र पाल सिंह के निर्देश पर कृषि विज्ञान संस्थान के प्रो. यू पी सिंह की अगुवाई में डॉ. जनार्दन यादव एवं विश्वविद्यालय के एपीआरओ राजेश सिंह ने 6 जुलाई को गाँव का निरीक्षण किया। प्रो. सिंह ने बताया कि 'कचरा लाओ बायोगैस ले जाओ' का नारा यहाँ हकीकत में देखा गया। करीब दो माह से यहाँ एक यूनित प्रभावी तौर पर कार्य कर रही है। इस यूनित के तहत गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले 30 घरों में बायोगैस से खाना पक रहा है। जल्द ही दो यूनित और लगाया जाना है। दो चरण में 80 और घरों बायोगैस से जोड़ने की योजना है। दौरे के उद्देश्य के बाबत टीम ने बताया कि योजना के विविध पहलुओं का आकलन तथा पर्यावरण की दृष्टि से भी जाँचना है। आरम्भिक तौर पर यह योजना अत्यन्त कारगर दिख रही है। हांलाकि इसे और भी पुख्ता और इकोफ्रेंडली करने के लिए कुछ विशिष्ट वैज्ञानिकों को जोड़ने की आवश्यकता है। कुलपति की मंशा के बावत टीम ने बताया कि सम्भवतः विश्वविद्यालय परिसर में बायोगैस की उपयोगिता और आसपास के गाँवों को इससे जोड़ने की सोच उपयुक्त है जिससे ऊर्जा संकट से निपटने एवं पर्यावरण संरक्षण को नया आयाम मिलेगा।



# FUTURE PERSPECTIVE

## Institute of Environment and Sustainable Development



Prof. DP Singh, Vice Chancellor Banaras Hindu University expressed his desire to establish an Institute of Environment and Sustainable Development during his first press conference on 8th May, 2008. The proposal to establish the Institute during XI Five Year Plan has been approved by UGC, New Delhi. The UGC has also allocated 7.50 crores for the establishment of this institute. Some of the important features of the proposed Institute are as follows:

- Legacy of the Institute:** Institute of Environment and Sustainable Development, BHU will be the 4th Institute of the University, Institute of Technology (1971), Institute of Medical Sciences (1971) and Institute of Agricultural Sciences (1980) being the other three.
- Sustainable Development:** Sustainable development is defined as "development that meets the needs of the present without compromising the ability of future generations to meet their own needs". It requires active and knowledgeable citizens and caring and informed decision makers capable of making right choices about the complex and interrelated economic, social and environmental issues.
- International Decade of Education 2005-2014:** The United Nations has declared 2005-2014 as the International decade of education for sustainable development and Banaras Hindu University will be fittingly celebrating this decade by establishing an Institute devoted to this cause.
- Mission:** Mission of the Institute is to carry out teaching, research and extension relevant to India's sustainable development leading to a future that ends poverty and delivers and sustains efficient and equitable management of the country's natural resources.
- Civic Challenges:** This institute will cover education about sustainable development

(developing an awareness of what is involved) and education for sustainable development (using education as a tool to achieve sustainability). This educational effort will encourage changes in behaviour that will create a more sustainable future in terms of environmental integrity, economic viability, and a just society for the present and future generations.

- Research and Development Challenges:** The institute will endeavor for a better understanding of critical scientific and social issues related to meeting global sustainable development goals through exacting research. BHU is taking the lead in developing the proposed Institute for teaching, research and outreach in the field of Environment and Sustainability Science. The Institute will provide a common platform where faculty from different departments of the University will be working in the interface areas leading to sustainable development and will be able to interact with each other and with outside experts, by sharing research results, experience, methods and strategies.
- Interdisciplinary Educational Environment:** The Institute will contribute to interdisciplinary education and research



**Prof. D. P. Singh**  
Vice Chancellor

in the areas of environment and sustainable development through coursework and Curriculum Development as key components, and by offering PhD, MSc., Diploma and Certificate Programmes in areas pertinent to Environment and Sustainable Development.

- Main Priorities:** Five research priorities are: global change and atmospheric pollution, natural resource management, sustainable agriculture, alternate energy resources and socio-economic and legal dimensions of sustainable development.

### BHU'S ENVIRONMENTAL CALENDAR

MONTH	2009	2009	2009	2009
<b>JANUARY</b>	4 11 18 25	1 8 15 22	1 8 15 22 29	5 12 19 26
<b>FEBRUARY</b>	5 12 19 26	2 9 16 23	2 9 16 23 30	6 13 20 27
<b>MARCH</b>	6 13 20 27	3 10 17 24	3 10 17 24 31	7 14 21 28
<b>APRIL</b>	7 14 21 28	4 11 18 25	4 11 18 25	1 8 15 22 29
<b>MAY</b>	1 8 15 22 29	5 12 19 26	5 12 19 26	2 9 16 23 30
<b>JUNE</b>	2 9 16 23 30	6 13 20 27	6 13 20 27	3 10 17 24 31
<b>JULY</b>	3 10 17 24 31	7 14 21 28	7 14 21 28	4 11 18 25
<b>AUGUST</b>	4 11 18 25	5 12 19 26	5 12 19 26	1 8 15 22 29
<b>SEPTEMBER</b>	6 13 20 27	6 13 20 27	6 13 20 27	2 9 16 23 30
<b>OCTOBER</b>	7 14 21 28	4 11 18 25	4 11 18 25	3 10 17 24 31
<b>NOVEMBER</b>	5 12 19 26	5 12 19 26	5 12 19 26	1 8 15 22 29
<b>DECEMBER</b>	6 13 20 27	6 13 20 27	6 13 20 27	2 9 16 23 30

**FEBRUARY**

- 2 World Wetland Day
- 28 National Science Day

**MARCH**

- 4 National Safety Day
- 21 World Forestry Day
- 22 World Water Day
- 23 World Meteorological Day

**APRIL**

- 22 Pithivi Divas/Earth Day

**MAY**

- 22 World Biodiversity Day

**JUNE**

- 5 Ganga Dusshahra
- 5 World Environment Day

**JULY**

- 14 Van Mahotsava
- 11 World Population Day

**SEPTEMBER**

- 16 World Ozone Day
- 22 Car Free Day

**OCTOBER**

- 04 World Animal Welfare Day

**NOVEMBER**

- International day for preventing the exploitation of the environment in war and armed conflict

**DECEMBER**

- 07 Bhopal Tragedy Day-National Pollution Day
- 25 Mahatma's Birthday (Sustainability Day)



## SPECIAL FEATURE

STRENGTH OF AYURVEDA  
IN GERIATRIC HEALTH CARE

Prof. Ram Harsh Singh

Prof. Emeritus, Faculty of Ayurveda,  
Banaras Hindu University, Varanasi

## Introduction

Aging is essentially a physiological phenomenon which results because of overwhelming of inherent evolutionary processes by the involutory changes occurring in the mind-body system. Such changes begin right in the beginning of life and get more and more overt with advancing chronological age. The progressing bio-involution ultimately precipitates into extreme senescence and finally death. Thus life-span is a time-bound entity and everybody is mortal. The main issue in geriatric care is not merely the concern about the physiological phenomenon which is inevitable, rather it is also the medical health problems and diseases specificity afflicting an individual in old age warranting medical management in order to sustain a comfortable and healthy aging. Thus geriatric care has to address to two-fold problems, firstly the basic anti-aging care to retard the rate of physiological aging and secondly the medical management of diseases and disorders specifically occurring in old age such as hypertension, ischaemic heart disease, diabetes, senile dementia, Alzheimer's disease, parkinsonism, degenerative arthritides, osteoporosis, opportunistic infections, prostatic enlargement, degenerative eye diseases like cataract, a range of angiopathies, neuro-degenerative diseases and senile psychoses which cause major morbidity in old age.

Ayurveda, being fundamentally the science of life and longevity, seems to have addressed these issues in an unique holistic manner involving not merely the

biological care, rather also encompassing the psychosocial and spiritual dimensions. There are strong possibilities to develop a safe and cost-effective package for geriatric health care on the basis of Ayurvedic life-style management, *Rasayana* therapy and practice of *yoga*.

## Population Aging

Population Aging denotes shifts in the age distribution of a population towards older ages which results as a direct consequence of the ongoing global fertility decline and decline of mortality at

older ages. Most demographers world over believe that population aging is going to be the most prominent demographic trend of the 21 st century and it has many important socio-economic and health consequences warranting immediate strategic care. Thus the 20 th century panic of population growth and its consequences are gradually disappearing from the scene and notable fertility decline and population aging is emerging on the global scene with its own challenges. The following table gives a glimpse of the rate of population Aging across the world.

Table-1: Observed and Forecasted Percentages of the Elderly (65+ years)

Countries/Regions	Year 1950	Year 2000	Year 2050
World	5.0	6.9	19.3
China	4.5	6.9	22.7
India	3.3	5.0	14.8
Japan	4.9	17.2	36.4
Europe	8.2	14.7	29.2
USA	8.3	14.7	29.2

## The Phenomenon of Aging

As stated above, aging is an inevitable physiological process. Why senile changes occur in the mind-body system, is not yet clearly known. Ayurveda considers aging as *swabhava* of life. In other words senescence is the *swabhava* ie. the very nature of the living being, because the life is time-bound and it is inherently mortal. Ayurveda believes that aging occurs only in the body and mind, not in the real essence of the life, i.e. its conscious component which is eternal and it only changes the body which is created by the Nature for one life-span and ends there after through

aging and death, while the real being, the *Atman* transmigrates to another body through rebirth ie *Punarjanma*.

The modern biosciences have identified certain probable causes of aging. A number of theories and observations have been projected such as genetic theory of aging, immunological theory, stress theory, free radical injury, hormonal involution theory etc but none of these have yet been proved. However, these researches obviously indicate that aging is a multi factorial phenomenon, the genomic and immune mechanisms seem to be the sheet anchors.



**Table-2: Various Contemporary Theories of Aging**

1. The Wear and Tear Theory	10. Mitochondrial Theory
2. The Neuroendocrine Theory	11. Errors and Repairs Theory
3. The Genetic Control Theory	12. Redundant DNA Theory
4. The Free Radical Theory	13. Cross-Linkage Theory
5. Waste Accumulation Theory	14. Autoimmune Theory
6. Limited no of Cell Division Theory	15. Caloric Restriction Theory
7. Hayflick Limit Theory	16. Gene Mutation Theory
8. Death Hormone Theory (DECO)	17. The Rate of Living Theory
9. Thymic –Stimulating Theory	18. The Telomerase Theory

Thus till date there is no fundamental contradiction between east and the west except the philosophy of time-bound life and rebirth and the splendid speculations about life beyond death.

As stated earlier aging and death are the *Swabhava* of life, still a long healthy life has been the cherished wish of all beings, in all cultures and traditions. The *Vedas* also pray – *Jivem sharadah shatam, Pashyem sharadah shatam*, Hence tremendous attempts have been made to prolong life and to sustain healthy aging. Ayurveda also links the phenomenon of aging with the doctrine of *Tridosas*. In principles the childhood is embedded with the *Kapha* in the body, adulthood with *Pitta* and old age with *Vata Dosa*. *Vata Dosa*, by nature, dries and decays the body and produces senile changes. Thus the phenomenon of aging can be evaluated in terms of the *tridosika* physiology, and aging can be managed in tune with the *Tridosas* theory of Ayurveda.

The important medieval *Laghutrayi* text of Ayurveda, namely *Sarangadhara Samhita* describes the process of aging depicting the involutionary features of specific bio-losses occurring during different decades of life due to aging. These descriptions are relevant even today if the chronology is corrected with present life-span of man.

Other important features of aging process are weakening of *Agni*, loss of integrity of *Srotamsi* and *ojabala*. Hence geriatric care warrants management of *Agni*, *Ama* and *Oja dosa* at biological level. Ayurvedic classics propound an unique concept of *Ojas*

which is the essence of all *Dhatus*. It is of two types namely 1. *Para-ojas* which is in minute quantity located in the heart and is vital for life; if *Para-ojas* is hurted, instantaneous death follows. 2. *Apara-ojas* which is relatively gross, is spread all over the body and is generally responsible for immune strength or *Ojabala*. *Ojabala* is considered to be of three categories, viz. 1. *Sahajabala* or primary natural immunity, 2. *Kalajabala* or acquired natural immunity, 3. *Yuktikrta* or artificially induced immunity. In Ayurveda *Ojabala* forms an important consideration in the process of aging. Besides many other life-style related factors the generic remedy prescribed for promoting *Ojas* status and longevity is *Rasayana* therapy.

#### The Rasayana Therapy

*Rasayana* (*Rasa* = nutrition + *Ayana* = circulation and promotion) specially deals with the science of nutrition, geriatric care and rejuvenation. *Rasayana* signifies not a single drug or medication, rather refers to a rejuvenative regimen which ofcourse uses rejuvenative remedies or drugs, dietetics and overall healthy life-style and positive psychosocial conduct. The use of *Rasayana* measures and remedies produces best qualities of *Dhatus*, i.e. body-tissues by acting through one or all of the following three principal levels of biological system with net result of improved nutritional status leading, in turn, to better qualities of tissues, longevity, immunity, resistance against disease and improved mental faculties. The primary levels/modes of *Rasayana* effect are :

1. At the level of *Rasa* (Promoting nutrient value of plasma),
2. At the level of *Agni* (Promoting biofire system responsible for digestion and metabolism)
3. At the level of *Srotas* (Promoting microcirculation and tissue perfusion)

Besides the above mentioned three generic modes of action of *Rasayana*, some *Rasayanas* are organ and tissue specific and are used for specific indications like *Medhya Rasayana* as brain tonics, *Hrdya Rasayana* as cardiotonics, *Vrsya Rasayana* as sex tonics, *Twacya Rasayana* as skin tonics, *Stanya Rasayana* as lactogenic tonics, *Kesyas Rasayana* as hair tonics, *Caksusya Rasayana* as eye tonics, *Kanthyas Rasayana* as tonics for throat and speech and so on.

Some *Rasayanas* are also disease-specific and are used in specific disease states as they induce specific bio-strength to combat a particular disease. Such *Rasayanas* are called *Naimittika Rasayana*. The classical *Naimittika Rasayanas* are *Silajatu* for diabetes mellitus and *Tubaraka* for skin diseases and leprosy. There can be many other *Naimittika Rasayanas* identifiable by proper *yukti*.

Some *Rasayanas* are also age-specific and can be prescribed for particular age groups. As stated earlier Ayurveda describes the qualities of each decade of the 100 years of estimated life-span. During the process of aging an individual goes on losing these age-related qualities and if this loss is compensated by age-specific *Rasayana* in specific age groups the rate of aging can be retarded to some extent and one can promote longevity. The decade-wise losses described by Sarangdhara and Vagbhatta are as mentioned below with suggested *Rasayana* remedies to compensate the losses.



**Table 3: Age Specific Bioloesses and Suggested Rasayana Remedies**

S.No.	Age in years	Age Specific Bidosses	Suggested Rasayana Remedies
1.	0-10	Corpulence	Vaca, Kasmari
2.	11-20	Growth	Kasmari, Bala, Asvagandha
3.	21-30	Lusture	Amalaki
4.	31-40	Intellect	Brahmi, Sankhapuspi
5.	41-50	Skin glow	Bhrngaraja, Jyotismati
6.	51-60	Vision	Jyotismati, Triphda
7.	61-70	Virility	Kapikacchu
8.	71-80	Strength	Bala, Amalaki
9.	81-90	Memory and cognition	Sankhapuspi, Brahmi.
10.	91-100	Locomotion	Sahachara

**Classification of Rasayana**

(1) As per scope of use :

(A) *Kama Rasayana* - which is used in healthy persons for further promotion of health. It is again of three subtypes :

(i) *Prana kama* to promote longevity.

(ii) *Srikama* to promote body lusture.

(iii) *Medha kama* to promote mental competence

(B) *Naimittika Rasayana* which is used specifically in the treatment of specific diseases viz *Silajatu* in diabetes.

(2) As per method of use :

(i) *Vatatapika Rasayana* i.e. outdoor regimen.

(ii) *Kutipravesika Rasayana* i.e. intensive indoor regimen including biopurification by *Pancakarma* and consumption of selected *Rasayana* in well controlled conditions.

(3) As part of life-style :

(i) *Ajasrka Rasayana* as content of daily diet.

(ii) *Acara Rasayana* i.e. Rejuvenative healthy life-style.

**The Rasayana Effect and Rejuvenation**

The *Rasayana* remedies described in Ayurveda are claimed to possess special nutritional supplement effect. Generally most of the *Rasayanans* are micromolecular nutrients and they act

through nutrition dynamics and not really on pharmacodynamics like other drugs. The *Rasayana* drugs are likely to be nutrient tonics, anti-oxidants, anti-stress, adaptogen and immuno-modulators. The net effect of all these attributes is the anti-aging effect. Certain recent studies on popular *Rasayana* remedies like *Amalaki*, *Asvagandha*, *Guduci*, *Brahmi* and classical compound *Rasayana Chyavanaprasa* have shown evidence to suggest their efficacy as anti-aging remedies. The following tables are being reproduced to give a glimpse of such an evidence about the popular *Rasayana* drug *Asvagandha* (*Withania somnifera* dunal).

**Table 4. Anti-stress Activity of Asvagandha in terms of Ed 50 in Stressed Rats : (Singh, 1987)**

Drugs Tested	Swimming performance Adrenal wt.	Prevention of Increase of Ascorbic Acid	Prevention of rise in Adrenal cortisol	Prevention of induced ulcers under stress	Antistress unit/mg/g
Aswangandha	---	13.0±1.4	14.5±1.5	16.0±1.8	14.9±1.5
Tulasi	13.3±1.2	12.0±1.6	13.0±1.5	13.4±2.0	13.7±1.3
<i>P. ginsen</i>	44.0±3.8	15.0±1.8	24.1±2.1	24.07±2.2	25.2±2.3

**Table 5. Plasma Corticosterone, Phagocytic Index and swimming endurance under normal and stress conditions (Archana 1999).**

Observation Mean±SE	Control	Aswangandha	Stress (Swimming)	Swimming Stress + Aswangandha
Plasma Corticosterone g/dl	98.95±0.51	98.95±0.27	107.2±0.38	99.77±0.14 p<0.05
Phagocytic Index	68.50±0.56	69.60±0.70	78.0±0.58	68.83±1.20 p<0.05
Total Swim Time			5.30±0.24	8.90±0.50 p<0.05

**Table 6. Biological Age Scale (BAS) and Brief Psychiatric Rating Scale (BPRS) before and after treatment (Dwivedi and Singh, 1997).**

Observations	Before Treatment	After Treatment	t	p
Biological age score	18.77±4.55	14.20±4.37	2.92	<0.01
Brief Psych.Score	32.40±5.22	22.93±2.86	6.12	<0.01

The above cited observations indicate that the Indian *Rasayana* drug *Asvagandha* has significant anti-stress effect on notably lower effective dose ( $Ed^{50}$ ) as compared to popular Chinese herbal tonic *Ginsen*. *Asvagandha* also shows relevant humeral basis for its anti-stress and anti-inflammatory effect. The clinical trial of *Asvagandha* in elderly

volunteers shows significant reduction in the rate of Biological Aging (BAS) and mental health status as measured by BPRS (Tab. 4-6).

**Rehabilitative Panchakarma Therapy**

Ayurveda practices an unique approach of bio-purificatory therapy designed to cleanse the micro channels of the body enabling the organism to



function normally and also to restore the inner transport system resulting in turn to better nutritional status with adequate chances of repair of wear and tear of the body with rejuvenative activity. In geriatric practice an Ayurvedic physician uses selective rehabilitative *Panchkarma* therapy avoiding the drastic evacuatory practices like *Vamana* and strong *Virechana* procedures. The schedule in the elderly should consists of medicated massage, sudation, *Pindasweda*, *Shirodhara* and *Brimhana Basti* suitably planned for each individual.

### Ayurvedic Management of Diseases of Old Age

Besides the rejuvenative approaches Ayurveda has notable potential to afford significant complementary therapeutic care in a range of diseases of the elderly and the same needs to be known to the

practicing physicians of all streams. *Arjuna*, *Guggulu* and *Puskarmula* as cardioprotectives in cases of Ischaemic heart disease, *Brahmi* and similar other *Medhya* drugs in treatment of senile dementias, *Varuna* and *Shigru* in treatment of senile enlargement of Prostate, *Triphala* in senile visual disorders, *Kapikacchu* in treatment of Parkinsons disease, *Amrita* and *Amalaki* in immunodeficiency, *Shirodhara* and *Shirobasti* in Tension headaches and different kinds of neurodegenerative conditions are some of the potential areas where Ayurvedic treatment has promise. Similarly the *Pindasweda* procedure of Keraliya *Panchakarma* therapy is known for its rehabilitative effect in many neurodegenerative conditions and myopathies.

### Conclusion

Ayurveda, being the science of life and longevity, contains a treasure of geriatric care. It deliberates on the science and philosophy of life and longevity with the goal of healthy aging and long life to achieve the *Purusartha catustaya* - *Dharma*, *Artha*, *Kama*, *Moksa*. It considers aging as *Swabhava* of life and describes in details the pattern of sequential losses of biological strength with advancing age in relation to the doctrine of *Tridosha*. The central focus of strength of Ayurveda in geriatric care swings around the concept of *Rasayana* therapy which compensates the age-related biological losses in the mind-body system and affords rejuvenative effect to a notable extent. Combining Ayurvedic *Rasayana*, dietetics, *swasthavrtta*, *sadvrtta*, *yoga* and spirituality it is possible to develop an effective package for geriatric care today for global use.

## INITIATIVES FOR ECO-FRIENDLY CAMPUS

- Initiatives to make BHU campus more eco-friendly.
- Institute of Environment and Sustainable Development sanctioned by UGC.
- Research and Development activities on Ganga Action Plan within the jurisdiction of BHU is being promoted.
- All the new buildings will have rain water harvesting in BHU.
- An Annual Calendar of Environmental Activities has been prepared.
- Planning to have 100 acre of forest in each of the 4 directions of Rajiv Gandhi South Campus.
- Every faculty and institute to have provision for safe disposal of degradable and non-degradable waste.



## INITIATIVES FOR PEACE EDUCATION AND ETHICS

- BHU aspires to be a trend setter in the field of peace, human values and ethics - to achieve excellence in quality education. This will be a homage to Gautam Buddha, Pandit Madan Mohan Malviya, and Mahatma Gandhi.
- Efforts are being made to establish UNESCO Chair on Peace Education.
- A PG course on "Peace and Development" is proposed. In this context, a MoU has been signed with the United Nations University of Peace, Costa Rica.
- Emphasis on concepts of Gyan, Vigyan and Yoga in education, in order to enrich the quality of education.
- Advanced Centre of Ayurveda, Yoga and Meditation ~Rs. 2.24 Crores (UP Govt.).
- A course curriculum indicating a charter of human values and ethics is being developed.



**LIST OF CANDIDATES WHOSE NAME HAVE BEEN RECOMMENDED BY THE RESEARCH DEGREE COMMITTEE  
FOR THE AWARD OF Ph.D./C" AKRAVARTI DEGREE AT ITS MEETINGS HELD ON 07.07.2008**

Sl. No.	Name of Candidates	Name of Supervisor	Topic of Research	Subject	Year of Award
<b>FACULTY OF AGRICULTURE</b>					
1.	Mohan Lal Choudhary	Prof. R. P. Singh	Studies on sequential and mixed application of herbicides under different methods of wheat establishment	Agronomy	2007
2.	Bikramaditya	Dr. U. N. Singh	Effect of Soil Moisture Regimes and Fertility Levels on Growth and Yield of Wheat ( <i>Triticum aestivum L. usitatissimum L.</i> )	Agronomy	2007
3.	Ms. Anupam Kumari	Dr. D. K. Sujan	Leisure Time Activities of the Rural Women : Critical Analysis	Extension Education	2007
4.	Vinod Kumar Singh	Dr. C. P. Srivastava Dr. Ramesh Chand (Co-sup.)	Genetics of rust resistance in pea ( <i>Pisum sativum L.</i> )	Genetics & Plant Breeding	2006
5.	Anaytullah	Dr. (Mrs.) Bandana Bose	Effect of Seed Hardening Treatment with Nitrate Salts on Physiological and Yield Attributes in Wheat ( <i>Triticum aestivum L.</i> ) under Heat stress	Plant Physiology	2007
6.	Sunil Kumar Pandey	Prof. A Hemantranjan Prof. J.P. Srivastava (Co-sup)	Physiological and Biochemical Performance of Mung Bea ( <i>Vigna radiata L.</i> ) under Salinity Stress in Relation to Zinc Nutrition.	Plant Physiology	2007
7.	Dharmendra Kumar Singh	Prof. O.P. Srivastava	Effect of Cobalt, Boron and Molybdenum on Nitrogen Availability to Pea ( <i>Pisum sativum L.</i> ) at different levels of Soil Fertility	Soil Science & Agricultural Chemistry	2007
<b>FACULTY OF ARTS</b>					
1.	On Narayan Rai	Prof. Narvadeshwar Rai	फारसी हिन्दी नाटकों में राष्ट्रीय चेतना	Hindi	2007
2.	Ms. Shivambhari Mishra	Dr. (Mrs.) Indra Bishnoi	Empowering Men and Women Through Self Help Group (SHG)	Home Science	2007
3.	Phramaha Boonmee Wannavises	Dr. Bimlendra Kumar	Role of Buddhist Monasteries in the Development of Buddhism in Thailand	Pali & Buddhist Studies	2007
4.	Phramaha Sakom Sridee	Dr. D.B. Chaube	The Problem of Suicide in the Context of Buddhist Ethics	Pali & Buddhist Studies	2007
5.	Yoshihisa Kotani	Dr. D.B. Chaube	A critical study of the upayas in Kashmir Saivism with special reference to Tantraloka	Philosophy & Rel.	2007
6.	Yatendra Kumar Singh	Dr. Dilip Kumar Dureha	Study of Postural Deformities and Remedial Measures of school children	Philosophy & Rel.	2008
7.	Ms. Nimisha Tiwari	Dr. Sukdev Bhoi	श्रीमद्देवीभागवत पुराण एक समीक्षात्मक अध्ययन	Sanskrit	2007
8.	Ms. Keshav Kishor Kashyap	Prof. Umesh Prasad Singh	दशरूपक और रसार्णवसुधाकर ने प्रतिपादित रस-तत्व-एक अनुशीलन	Sanskrit	2007
9.	Praveen Kumar Mishra	Prof. M.L. Sharma	शृंगारसप्तशतिका का समीक्षात्मक अध्ययन	Sanskrit	2008
10.	Anuradha Chatterjee Anuradha Singh	Prof. A. K. Tripathi	The Poetry of A.K. Ramanujan : A Cultural Perspective	English Urdu	2008 2005



FACULTY OF COMMERCE					
1.	Kamakhya Narain Singh	Prof. Raj Kumar	Strategic Management of Microfinance Institutions and their role in Sustainable Development of Eastern U.P.	Commerce	2007
FACULTY OF ENGG. & TECHNOLOGY					
1.	Neti V L Narasimha Murty	Dr. Satyabrata Jit	Analytical Modeling Optically controlled GaAs MESFETs with Emphasis on Substrate Related Effects	Electronics Engg.	2006
2.	Chhail Kumar Behera	Prof. M Shamsuddin	Thermodynamic Investigations of Ternary Metallic Systems : Cd-Zn-Ga and Sn-Zn-Ga	Metallurgical Engineering	2007
FACULTY OF LAW					
1.	Ratan Kumar	Dr. D. K. Srivastava	भारत में अपराध राजनीति में सम्बन्ध का एक विधिक आलोचनात्मक अध्ययन	Law	2006
2.	Shailendra Kumar Gupta	Prof. G. P. Verma	Bhopal Mass Disaster : An Appraisal of Law the Judicial Approach and Emerging Problems of Administration of Environmental Justice in India	Law	2005
3.	Kshemendra Mani Tripathi	Prof. D. P. Verma	Right to Environmental Protection in India : A critical Appraisal	Law	2006
FACULTY OF MANAGEMENT STUDIES					
1.	Radha Krishan Lodhwal	Dr. Rekha Prasad	Corporate Citizenship in India : An Assessment of Selected Enterprises	Management Studies	2007
FACULTY OF SVDV					
1.	Jeevesh Jha	Dr. Kamlesh Jha	श्रीक्रमाभिज्ञापना की सानुवाद समीक्षा	Dharmagam	2007
FACULTY OF SCIENCE					
1.	Ms. Sameera Varma	Prof. H. P. Pandey Prof. K. Tripathi (Co-sup)	A biochemical Study of apoptosis on placental cells in some hypertensive disorders	Biochemistry	2007
2.	Vivekanand	Prof. S. M. Singh	An investigation on the role of biological response modifiers and gender dimorphism in augmentation of suppressed antitumor immune responses in a tumor bearing host	Biotechnology	2007
3.	Balwant Kumar Singh	Prof. R. S. Upadhyay	Management of Southern Stem Blight of Soybean by Trichoderma	Botany	2007
4.	Ms. Garima Upadhyay	Dr. (Mrs.) Archana Chakravarty	A Field Survey to study the Growth and development of Infants in Relation to their Feeding pattern in Varanasi City	Home Science	2007
5.	Pranveer Singh	Prof. B. N. Singh	Population Genetics of Drosophila Inversion polymorphism in Indian population of Drosophila ananassae	Zoology	2007



FACULTY OF SOCIAL SCIENCES					
1.	Deepak Kumar Pandey	Prof. Priyankar Upadhyay	Human Security and Conflict Resolution : A case study of East. U.P.	Pol. Science	2007
2.	Ms. Snigdha Sharma	Prof. A. P. Singh	Role of Stress, Job Attitude and Personality in Etical Behaviour among Private and Public Sector Managerial Personnel	Psychology	2007
3.	Ms. Nivedita Singh	Prof. Meenakshi Arora	Need Pattern and Adjustment of Adolescents of Employed and Non-employed Mothers	Psychology	2006
4.	Phramaha Somchat Phiutongngam	Prof. A. P. Singh	Relationship of Leadership Styles, Cerebral Dominance and Type-A Personality with Decision Making Behaviour among Managerial Personnel	Psychology	2007
5.	Shashi Kant Dubey	Prof. P. N. Pandey	उपभोक्ता संसाधनों के प्रचलन में सूचना प्रौद्योगिकी का प्रभाव (एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)	Sociology	2007
6.	Ms. Rachana Tripathi	Prof. V. Gopal	कार्योजित महिलाओं का सामाजिक सन्दर्भ एवं पारिवारिक समायोजन (वाराणसी नगर पर आधारित एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)	Sociology	2006

**LIST OF CANDIDATES WHOSE NAME HAVE BEEN RECOMMENDED  
BY THE RESEARCH DEGREE COMMITTEE FOR THE AWARD OF Ph.D./C" AKRAVARTI DEGREE  
AT ITS MEETINGS HELD ON 16.09.2008 to 06.01.2009**

Sl. No.	Name of Candidates	Name of Supervisor	Topic of Research	Subject	Year of Award
<b>FACULTY OF AGRICULTURE</b>					
1.	Prem Kumar Thakur	Prof. R. S. Dixit	A Study on Agricultural Growth and Instability in North Bihar- An Economic Analysis	Agriculture	2007
2.	Ravi Kant Singh	Prof. J. S. Bohra	Studies on Diversification and Intesification of Rice Wheat Cropping System	Agronomy	2008
3.	Ms. Amandeep Kaur	Prof. N. N. Singh	Effect of different insecticides on <i>Trichogramma brasiliensis</i> Ashmead	Entomology & Agric. Zoology	2008
<b>FACULTY OF ARTS</b>					
1.	Ms. Meena Singh	Prof. P. N. Singh	प्राचीन भारत में केश-सज्जा	A.I.H.C. & Archaeology	2008
2.	Sawant Kumar Singh	Dr. Dasharth Gond	प्राचीन भारत में परब्राजक परम्परा एक अध्ययन	A.I.H.C. & Archaeology	2007
3.	Dharmendra Kumar Chand	Dr. S. K. Mishra	Letude Comparee d' Arthur Rimbaud	French Studies	2007
4.	Vinay Kumar Singh	Dr. S. K. Mishra	Benares Vu Par Les Voyageurs Fracais	French Studies	2007



5.	Pradosh Kumar Mishra	Dr. A. K. Singh	Emerging Trends in Contemporary Indian Painting during 1990 and 2004 A Study in the perspective of Globalisation and National Identity	History of Art	2007
6.	Anil Kumar Singh	Dr. Ajay Kumar Singh	Problems Relating to Display of Sculptures in Indian Museums : A Museological Study	History of Art	2007
8.	Phra Seree Srinagam	Dr. Mukul Raj Mehta	Mind in Early Buddhism	Philosophy & Religion	2008
9.	Phra Boonrian Pilapun	Dr. Mukul Raj Mehta Research Scientist C	A Critical Study of the Concept of Metta in Theravada Buddhism	Philosophy & Religion	2008
10.	Phramaha Sombat Taweekoon	Dr. M. R. Mehta	Non-Violence of Mahatama Gandhi and Mahakaruna of Buddhism : A Comparative Study	Philosophy & Religion	2008
11.	Ms. Smriti Mishra	Prof. Dilip Kumar Dureha	A Comparative Study of Anxiety, Frustration and Achievement Motivation among the Sports Persons of Uttar Pradesh	Philosophy & Religion	2007
12.	Sanjay Sonker	Prof. (Mrs.) Sushma	Psychomotor Variables as Limiting Factor in Basketball Performance	Physical Education	2007
13.	Gaurav Kumar Singh	Dr. Rajeev Vyas	A study of Physical Physiological and Psychological Characteristics of National Level Basketball Players	Physical Education	2008
14.	Jitendra Pratap Singh	Dr. Rajeev Vyas	A comparative study of Physical Physiological and Psychological Characteristics of Public School Children of India and Nepal	Physical Education	2008
15.	Saiyied Sajjad Mahdi	Dr. Naseem Ahmad	बीसवीं सदी में उर्दू कसीदा निगारी	Urdu	2007

#### FACULTY OF AYURVEDA

1.	Ms. Shweta Verma	Prof. Mahendra Sahai	Chemistry of Plant Constituents	Medical Chem.	2007
2.	Balkrishan Sevatar	Prof. B. N. Upadhyay	Evaluation of Efficacy of Pippali and Some Ayurvedic Compound Drugs in the Management of Rajayakshma (Pulmonary Tuberculosis)	Medical Chem.	

#### FACULTY OF ENGG. & TECHNOLOGY

1.	Bhupendra Singh	Prof. P. C. Pandey	Studies on Ormosil Modified Electrodes for Application in Electrochemical Sensors	Applied Chem.	2007
2.	Sujoy Banerjee	Prof. (Mrs.) Mira Debnath (Das)	Studies on Penicillin Acylase Enzyme and 6-APA Production	Biochemical Engineering	2007
3.	Prabhas Bhardwaj	Prof. Anil Kumar Agrawal	Group Technology Application for Flexible Manufacturing System : Some Models and Methodologies	Mechanical	2008



FACULTY OF LAW					
1.	Ms. Bibha Tripathi	Prof. M. P. Singh	Contempt of Court Democracy & Judicial Accountability	Law	2008
FACULTY OF MANAGEMENT STUDIES					
1.	Ms. Vidhishree	Dr. Rekha Prasad	Enterprise Resource Planning (ERP) in India : Tasks and Options	Management Studies	2002
FACULTY OF PERFORMING ARTS					
1.	Ram Krishna Shukla	Dr. V. Balaji	उत्तर प्रदेश एवं बिहार के कतिपय लोक संगीत शैलियों तथा रचनाओं का अनुशीलन	Instrumental Music	2007
FACULTY OF AGRICULTURE					
1.	Ms. Chaman Lal Sharma	Prof. A Vaishampayan	Genetic and Physiological Studies on the plant growth promoting rhizobacteria in interaction with rice ( <i>O. sativa</i> L.) plants	Genetics & Plant Breeding	2007
2.	Ram Kumar	Prof. M. M. Syamal	Studies on Floral Biology and Variability in Fruit characters of Aonla ( <i>Emblica Officinalis Gaertn</i> )	Horticulture	2007
3.	Ravindra Prasad	Dr. L.C. Prasad	Molecular Diversity in <i>Bipolaris sorokiniana</i> and Genetic Association of Some Morpho-physiological Traits with Resistance to Spot Blotch Disease in Barley ( <i>Hordeum vulgare</i> L)	Genetics & Plant Breeding	2008
FACULTY OF ARTS					
1.	Ajay Pratap Verma	Prof. P. N. Singh	प्राचीन भारतीय संस्कृति में आर्य	AIHC & Arch.	2008
2.	Ms. Archana Sharma	Prof. P. N. Singh	प्राचीन भारतीय साहित्य एवं कला में श्रीलक्ष्मी	AIHC & Arch.	2008
3.	Ms. Mamata Tewari nee Mamata Mishra	Dr. Ramji Pandey	शतपथ ब्राह्मण के विविध यज्ञ एवं यज्ञीय अनुष्ठानों का समालोचनात्मक अध्ययन	AIHC & Archaeology	2007
4.	Ms. Sarita Singh	Dr. O. N. Singh	गुप्तकालीन रजत और ताम्र मुद्राओं का अध्ययन	AIHC & Arch.	2008
5.	Aradhana Tiwari	Prof. Balraj Pandey	स्त्री-विमर्श के सन्दर्भ में महिला लेखिकाओं का उपन्यास साहित्य (1990-2000)	Hindi	2008
6.	Ms. Priyadarshini	Prof. Balraj Pandey	सामाजिक परिवर्तन के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी की समकालीन कहानी(1990-2000)	Hindi	2008
7.	Ms. Shashi Kala	Prof. Nirmal Kumari Varshney	वृन्दावनलाल वर्मा के उपन्यास: संवेदना एवं शिल्प	Hindi	2007
8.	Ms. Noopur Tiwari	Prof. Balraj Pandey	बीसवीं शताब्दी का अन्तिम दशक व हिन्दी उपन्यासों की सामाजिक चेतना	Hindi	2008
9.	Vraj Raj Pandey	Dr. Manoj Kr. Singh	मध्ययुगीन सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना और मीराबाई का काव्य	Hindi	2008
10.	Ms. Renu Rai	Prof. Awadesh Pradhan	मिथिलेश्वर का कथा संसार	Hindi	2008
11.	Ms. Himanshu Kumar	Prof. Sudhakar Singh	स्वातन्त्रयोत्तर हिन्दी रचनाकारों का आत्मकथा साहित्य	Hindi	2008
12.	Ms. Sheetal Rana	Dr. Ajay Kumar Singh	Folk Wooden Sculptures in the River Valleys of Ravi and Beas, Himachal Pradesh.	History of Art	2007
13.	Ven Saijana	Dr. Vimelendra Kumar	A Study of the Life of Ananda and His contribution to Buddha's Sasana	Pali & Buddhist Studies	2008
14.	Deep Kumar Trivedi	Dr. D. B. Chaube	त्रिक दर्शन में स्पन्द की अवधारणा: एक समीक्षात्मक अध्ययन	Philosophy & Religion	2007
15.	Sanjay Kumar Singh	Dr. M. R. Mehta	बौद्ध एवं प्राचीन न्याय दर्शन में प्रत्यक्ष प्रमाण का तुलनात्मक अध्ययन	Philosophy & Religion	2008

# GLIMPSES OF IMPORTANT EVENTS



BHU Student's Council reconstituted for session 2008-09



Prof. B.D. Singh, Rector, Banaras Hindu University with the Chairman, UGC Committee Prof. S.P. Thyagarajan



Prof. D. P. Singh, Vice Chancellor pays homage on the occasion of Gandhi Jayanti.



Hon'ble Union Minister of State for Health & Family Welfare visiting BHU Hospital



Prof. D. P. Singh, Vice Chancellor lays foundation stone of Trauma Centre



Vice Chancellor interacting with Journalist of Lucknow & Delhi



Vice Chancellor inaugurates 64 slice CT Scan facility



International students celebrating Independence Day



# GLIMPSES OF IMPORTANT EVENTS



Prof. D. P. Singh served as a chief guest at U.P. College Centenary Celebration  
 Prof. Kirti Singh, Former, Vice Chancellor of NDUAT, Faizabad,  
 HPKV, Palampur and IGKV, Raipur, Prof. Punjab Singh,  
 Former Vice Chancellor, BHU and Prof. R. P. Singh,  
 Former Vice Chancellor, MPUAT, Udaipur



Vice Chancellor Prof. D. P. Singh greets  
 Hon'ble Vice Chairman of National Commission for SC



Prof. D. P. Singh, Vice Chancellor with  
 Hon'ble Chief Justice of UP Hemant Laxman Gokhale



Vice Chancellor, Prof. D.P. Singh addressing Faculty & Students  
 on the occasion of Independence Day



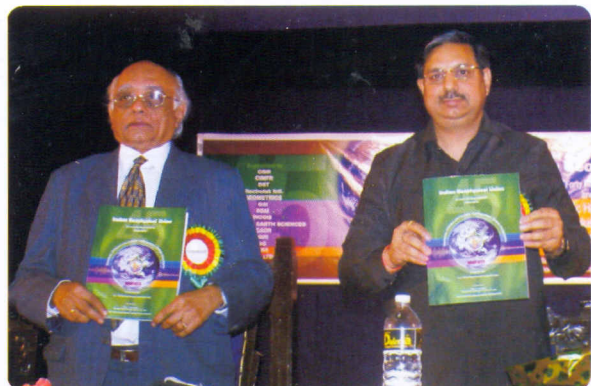
Dr. Mangala Rai, DG, ICAR along with DDGs Crops & Education  
 in the national conference at BHU



Prof. D.P. Singh, Vice-Chancellor with  
 Prof. Yashpal during UGC-AICTE review Committee meeting at BHU



Prof. D. P. Singh, Vice Chancellor, BHU  
 addressing on Brainstroming Meeting



Prof. D.P. Singh, Vice-Chancellor with Prof. R. Chidambaram,  
 Principal Scientific Advisor, Govt. of India  
 in the inaugural session of Indian Geophysical Union

Prof. D. P. Singh, Vice Chancellor  
Releases "Environmental Commitment"  
on the occasion of

## World Environment Day



BANARAS HINDU UNIVERSITY

# ENVIRONMENTAL COMMITMENT

To clean, green and beautify our University Campus

On **World Environment Day**

5<sup>th</sup> June, 2008



>>>  
**We are committed...**



We shall rationalise the use of water, tap tightly and contribute in water conservation.



We shall off the electric switch while going outside the room at workplace and home.



We shall not throw any waste or food materials in polythene bags on road or drain.



We shall use both side of the paper.



We shall not burn solid waste materials in open atmosphere.



We shall protect the green trees and plant new trees.

